आमेर की स्थापत्य कला

अमिता कुमारी

आमेर में शिलादेवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। शिला देवी के पार्श्व में भगवान गणेश और मीणा कुल देवी 'हिंगला' की प्रतिमा है। मन्दिर का सम्पूर्ण काय संगमरमर द्वारा कराया गया है। शिलादेवी की प्रतिमा महिषासुर मर्दिनी के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी 8 भुजाएँ है। यह मूर्ति एक पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण है। मन्दिर के जगमोहन में चांदी की घंटी बंधी हुई है। इस मूर्ति को गर्भगृह में प्रतिष्ठित करवाया गया है जो उत्तराभिमुखी है। देवी की मूर्ति महिषासुर मर्दिनी के रूप में स्थापित है। मंदिर का मुख्य द्वार चांदी से निर्मित है। इस पर नवदुर्ग तथा 10 महाविद्याओं कों चित्रित किया गया है। काले रंग के पत्थर से निर्मित प्रतिमा गर्भगृह में उत्त्रराभिमुख प्रतिष्ठित है। इस पर नव दुर्गा शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी एवं सिद्धीदात्री की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। दस महाविद्याओं के रूप में काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धुमावती, बंगलामुखी, श्रीमातंगी, और कमला देवी को दर्शाया गया। मुख्य द्वार के उपर लाल पत्थर की छोटी सी गणेश जी लाल पत्थर की मूर्ति प्रतिष्ठापित है। मंदिर का मुख्य द्वार चॉदी से निर्मित है। इस रूप में इसकी प्रतिष्ठा सवाई जयसिंह ने कराई थी। अन्य मंदिरों में अम्बिकेश्वर महादेव मंदिर, नृसिंह मंदिर अपने शिल्प और सौन्दर्य के कारण दर्शनीय है। दिलाराम बाग, आमेर के राजप्रसादों के नीचे की ओर स्थित है। इसका निर्माण राजा भारमल ने ईस्वी 1585 में करवाया था। बादशाह अकबर जब आमेर पधारे थे तो उनके विश्राम हेतु विश्रामगृह और इस बाग का निर्माण करवाया गया था।